विचार बिन्दु

जिस प्रकार थोड़ी-सी वायु से आग भड़क उठती है, उसी प्रकार थोड़ी-सी मेहनत से किस्मत चमक उठती है। –अज्ञात

सेवा क्षेत्र के बाद अब कल-कारखानों को बढ़ाने पर ध्यान देना होगा

इसमें कोई शक नहीं कि बावजूद कोविड महामारी के लॉकडाउन और फिर रूस-यूक्रेन युद्ध से उपजे अंतर्राष्ट्रीय झंझावातों से भारतीय अर्थव्यवस्था कई अन्य देशों के मुक़ाबले बेहतर तरीके से संभली रह सकी है। उसके शीघ्र ही पांच ट्रिलियन वाली अर्थव्यवस्था हो जाने की बात जब कही जाती है तो वह अब कपोल कल्पना नहीं लगती। अभी भारतीय अर्थव्यवस्था जिस मुकाम पर है वह सेवा क्षेत्र के बल-बूते पर है। लेकिन आगे ऊंची छलांग लगाने के लिए केवल सेवा क्षेत्र पर्याप्त नहीं है। इसके लिये देश में उत्पादन क्षेत्र (मेन्युफैक्चरिंग) का आधार बनना भी बहुत महत्वपूर्ण है जिसमें उद्यमियों की पहल जरूरी है। सरकार को उनकी पहल के लिए रास्ता आसान करना होगा। विदेशमंत्री एस. जयशंकर ने हाल ही में कॉर्पोरेट जगत से दो टूक कहा कि वे अपनी इस जिम्मेवारी से भागें नहीं। ऐसे वित्तीय विशेषज्ञों से जयशंकर उचित ही सहमत नहीं हैं जो सेवाओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करने की पैरोकारी करते हैं।

वर्तमान में देश की असली शक्ति उसकी युवा आबादी है और उसके लिए रोजगार के साधनों के विस्तार की बड़ी प्राथमिकता किसी भी सरकार की होनी चाहिए ताकि ये युवा अर्थव्यवस्था में सक्रिय भागीदारी निभा सकें जिससे देश की संपत्ति बढ़े और उसमें उनका भी बराबरी का हिस्सा हो। मगर यह बात भी समझ में आनी जरूरी है कि सरकारी नौकरियां और सेवा क्षेत्र यह महत्वाकांक्षा पूरी नहीं कर सकते। सरकारी नौकरियों के प्रति आमजन के स्वाभाविक झुकाव का लंबा इतिहास रहा है। भ्रष्टाचार भी इसी तंत्र से जन्मता है। काम न करने की संस्कृति भी इसी तंत्र की देन है। यही तंत्र जनहित के नाम पर ऐसी बाधाएं खड़ी करता है जिनसे वे साधन आसानी से तैयार नहीं हो पाते जो हमारे यहां देश की युवा पीढ़ी के हाथों को काम देने की आवश्यकता पूरी कर सकें। रोजगार के लिये राज्य पर निर्भरता सामंती और ब्रितानवी उपनिवेश की देन है। सबको रोजगार राज्य खुद दे, यानी सबको सरकारी नौकरियां मिले, यह आकांक्षा भारतीय जनमानस में गहरे तक बैठी हुई है। पुरानी भारतीय अर्थव्यवस्था जो पहले कभी स्थानीय उत्पादों के आधार पर या कहें ग्रामीण कुटीर उद्योग पर टिकी थी वह इस कारण समाप्त हो गई क्योंकि उसे सरकारी नौकरी से बेहतर नहीं समझा गया।

छोटी-छोटी सामंती रियासतों के प्रभुत्व के चलते कोई अखिल भारतीय सत्ता का ऐसा तंत्र भी नहीं बन पाया जिसमें बड़े कारखाने हों, वृहद उत्पाद हो और जिसके वितरण का सुनिश्चित तंत्र और बाज़ार बन सके। वृहद उत्पादन का क्षेत्र सिर्फ कृषि का था जिस पर देश की अधिकतर आबादी निर्भर करती थी। अंग्रेजों के राज में सब जानते हैं कि देशी उत्पादन क्षेत्र को कभी तवज्जो नहीं दी गई। भारत से कच्चा माल बाहर जाता रहा और ब्रिटेन के कल-कारखाने फलते फूलते रहे, वहां के लोगों को रोजगार मिलता रहा और वे हिन्दुस्तानी लोगों की कीमत पर फलते-फूलते रहे। बड़े पैमाने पर बना माल वहां से यहां आता रहा। इसीलिए यह जुमला बना कि इस देश में सुई भी नहीं बनती थी। देशी उत्पादन की व्यवस्था के अभाव में दलाली का कारोबार ही परवान चढ़ता रहा, जो कुछ हाथों तक ही केंद्रित हो सकता था। मगर आज भी देश की अर्थव्यवस्था का बड़ा हिस्सा सेवा क्षेत्र ही है। नये आंकड़े बताते हैं कि देश के सकल उत्पाद में कृषि क्षेत्र जो शीर्ष पर था उसकी जगह अब सेवा क्षेत्र ने ले ली है। वर्ष 2021 में कृषि की जीडीपी में भागीदारी 16.82 प्रतिशत रह गई। किन्तु उस पर देश की करीब 40 प्रतिशत आबादी अब भी अपनी आजीविका के लिए निर्भर करती है। यह अवहनीय है। इस आबादी को दूसरे क्षेत्र में काम करने योग्य बनाने की इस समय सबसे बड़ी जरूरत है। वह औद्योगिक उत्पादन का क्षेत्र ही हो सकता है जिसका योगदान अभी देश की जीडीपी में 26 प्रतिशत ही है।

देश ऊंची छलांग लगाने के लिए तैयार है मगर गरीबी को समाप्त करने और चीन के सामने मजबूत आर्थिक शक्ति के रूप में उभरने के लिए उसे एक महान उत्पादक (मेन्युफैक्चरिंग) क्षमता हासिल करनी होगी। विश्व बैंक का अनुमान है कि 2021 में भारत में 14 या उससे कम उम्र के 360 मिलियन से अधिक बच्चे थे, चीन से 112 मिलियन अधिक। यह युवा आबादी हमारी ताकत है।

पूरे आधुनिक इतिहास में औद्योगिक विकास विश्व राजनीति का महत्वपूर्ण चालक रहा है। औद्योगिक क्षेत्र में शुरुआती बढ़त ने ही ब्रिटेन को 19वीं सदी में दुनिया का नेता बनाया था। बाकी यूरोप और पश्चिमी शक्तियां भी इसी राह पर चलते हुए पूरी दुनिया पर हावी होने में कामयाब रहीं। इधर जापान की प्रारंभिक औद्योगिक सफलता ने उसे भी 19वीं शताब्दी के अंत तक एशिया की सबसे बड़ी शक्ति बना दिया था। हम जानते हैं कि उन्नीसवीं शताब्दी में पश्चिम का दुनिया पर वर्चस्व कल-कारखानों और रेलमार्गों से बढ़ा। अंग्रेजी काल में रेलमार्ग इसलिये बने कि यहां का कच्चा माल उनके कारखानों तक आसानी से और तेजी से पहुंच सके। पश्चिम का प्रभुत्व चीन के माओ त्से तुंग ने कल-कारखानों से ही तोड़ा। ताइवान और दक्षिण कोरिया भी अपने मेन्युफैक्चरिंग उद्योगों से ही अपनी धाक जमाए हुए हैं। इससे पहले जापान भी यह करके दिखा चुका है। आज़ादी के बाद हिंदुस्तान में कारखाने लगने लगे मगर राज्य के हस्तक्षेप ने भ्रष्टाचार का ऐसा सामंती तंत्र खड़ा कर दिया जिससे हम अब भी नहीं उबर पा रहे हैं। विश्व बाजार के लिए मेन्युफैक्चरिंग भारत का मजबूत पक्ष नहीं रहा है।

जर्जर बुनियादी ढांचे, महंगी और अविश्वसनीय बिजली, जटिल श्रम और भूमि कानून, और निराशाजनक नौकरशाही ने भारत को एशिया में औद्योगीकरण की दौड़ में पीछे बनाये रखा। इस दौड़ में जापान, दक्षिण कोरिया, ताईवान, सिंगापुर, वियतनाम और चीन सभी भारत से आगे निकल गए। भारतीय और चीनी अर्थव्यवस्थाओं की तुलना के आंकड़े देखना दिलचस्प होगा। विश्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार, 1980 में भारत का सकल घरेलू उत्पाद चीन का 64 प्रतिशत था। जब 2001 में चीन विश्व व्यापार संगठन में शामिल हुआ, तब तक भारत की अर्थव्यवस्था चीन की तुलना में केवल 28 प्रतिशत रह गई। 21वीं सदी में कई वर्षों के तीव्र विकास के बावजूद, 2021 तक भारत की अर्थव्यवस्था और भी पिछड़ गई और चीनी अर्थव्यवस्था के केवल 17 प्रतिशत के बराबर रह गई। दूसरी तरफ भारत ने आबादी में चीन के साथ बराबरी कर ली। भले ही अब भारत में एक विश्व स्तरीय आईटी उद्योग खड़ा हो गया है, मगर वह उस तरह के उद्यम के रूप में नहीं उभरा है जो एशिया और उसके बाहर आर्थिक क्षेत्र में भारत को चीन के मुकाबले मजबूत कर सके। यदि भारत की अर्थव्यवस्था ने पिछले 40 वर्षों में चीन जैसी गति बनाए रखी होती, तो वर्तमान में भारत का सकल घरेलू उत्पाद 2.73 ट्रिलियन डॉलर के बजाय 10 ट्रिलियन डॉलर का होता। मगर ऐसा हो न सका।

भारत में बड़ा औद्योगिक आधार नहीं बन सका और समाजवादी दौर में सरकारी नियंत्रण, वामपंथी श्रम संगठनों के दबाव में कल-कारखाने पनपने की जगह ढहते ही चले गये। लेकिन अब नये हालात में देश की अर्थव्यवस्था का राजनैतिक नेतृत्व करने वालों की वैचारिक प्रतिबद्धता खुले बाज़ार, निजीकरण और उद्योग जगत में सरकार के कम से कम दखल की रही है जिससे नियंत्रित मगर खुले बाज़ार की आगे की राह आसान होनी चाहिए। विश्व स्तर की सूचना प्रौद्योगिकी का विकास भारत की अब तक की महान आर्थिक उपलब्धि रही है।

भारत के तकनीकी क्षेत्र में उदय ने एक उभरते हुए भारतीय मध्यम वर्ग के विस्तार में मदद की है। मगर अकेला परिवर्तनकारी आईटी क्षेत्र का विकास ही पर्याप्त नहीं है। भारत को इससे अधिक की आवश्यकता है। उसे उत्पादन करने वाले कल-कारखानों तथा ढांचागत विकास के कामों पर ऊंची छलांग लगाने की जरूरत है जिसकी तरफ विदेश मंत्री इंगित कर रहे हैं।

देश ऊंची छलांग लगाने के लिए तैयार है मगर गरीबी को समाप्त करने और चीन के सामने मजबूत आर्थिक शक्ति के रूप में उभरने के लिए उसे एक महान उत्पादक (मेन्युफैक्चरिंग) क्षमता हासिल करनी होगी। विश्व बैंक का अनुमान है कि 2021 में भारत में 14 या उससे कम उम्र के 360 मिलियन से अधिक बच्चे थे, चीन से 112 मिलियन अधिक। यह युवा आबादी हमारी ताकत है। आईटी आधारित सेवा क्षेत्र युवाओं के केवल एक अंश को रोजगार प्रदान कर सकता है। उन करोड़ों भारतीय कामगारों श्रमिकों के लिए, जो अंग्रेजी नहीं बोलते हैं और गणित का सीमित कौशल रखते हैं, कल-कारखाने ही उन्हें अर्थव्यवस्था में सक्रिय भागीदार बना कर गरीबी से बाहर निकालने के साधन बन सकते हैं। बढ़ते सैन्य खर्च के साथ ही बड़े आकार की अर्थव्यवस्था बनाना भारतीयों के लिए संभव है। ऐसा भारत-प्रशांत क्षेत्र में चीन के खतरे से बचने के लिए भी जरूरी है। अगर भारत और चीन के बीच की आर्थिक खाई कम होने लगेगी, तो एशिया में शक्ति संतुलन भी बदलना शुरू हो जाएगा, और चीन को अपनी क्षेत्रीय और विश्व राजनीति के प्रति अपने दृष्टिकोण पर पुनर्विचार करने पर मजबूर होना पड़ सकता है। नई वैश्विक परिस्थितियों में चीनी महत्वाकांक्षाओं और शक्ति को नियंत्रण में रखने के लिए अमेरिका को भारत के साथ झक मार कर काम करना पड़ रहा है।

बड़ी तस्वीर यह भी है कि अमेरिका को बड़े होने के अपने परंपरागत अहंकार से निकल कर उसे भारत उसकी शर्तों पर स्वीकार करना पड़ रहा है। अंतरराष्ट्रीय और घरेलू कारक ऐसे बन रहे हैं कि भारत की अर्थव्यवस्था को ऊंची छलांग लगाने का अवसर मिल रहा है। हालात ऐसे बन रहे हैं कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्पादनकर्ता चीन पर अपनी निर्भरता कम करने पर विचार कर रहे हैं। सरकार को युवाओं की गुणवत्ता वाली कौशल शिक्षा पर ध्यान दे, कल-कारखानों को बढ़ावा दे और नियामक सुधारों के साथ राजमार्गों, रेलमार्गों और बंदरगाहों में निवेश को प्रोत्साहित करे तो भारत के प्रत्येक युवा के हाथ को काम मिलना संभव हो सकता है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक

आज बिरज में होरी रे रसिया... बेजोड़ है ब्रज की होली

प्रकाश चंद्र शर्मा

दुनिया में होली सिर्फ एक दिन मनाई जाती है, लेकिन ब्रज में फाल्गुन आते ही हवा में अबीर, गुलाल उड़ने लगते हैं। चालीस दिनों तक चलने वाले ब्रज के होली महोत्सव का शंखनाद बसंत पंचमी से शुरू हो जाता है। वसंत पंचमी यानि सरस्वती पूजन के दिन भगवान श्रीकृष्ण अपने भक्तों संग वृंदावन में होली खेलते हैं। ब्रज में इस दिन मंदिरो में ठाकुरजी को गुलाल अर्पण कर भक्तों पर भी प्रसाद के रूप में गुलाल डाला जाता है। ब्रज में होली महोत्सव का आनंद लेने के लिए देश दुनिया के श्रद्धालु पहुंचने लगे हैं।

बसंत पंचमी के दिन से ही मथुरा-वृंदावन ब्रज मंडल में भव्य रंगोत्सव प्रारंभ हो जाता है। रंगोत्सव के तहत इस बार बरसाना में लट्ठमार होली 28 फरवरी को होने वाली है और वहीं, नंदगांव में ये लट्ठमार होली 1 मार्च को खेली जाएगी। देश विदेश में विख्यात ब्रज की होली में समाज गायन विशेष स्थान रखता है, जिसमें होली गीत और पदगायन की एक अनूठी परंपरा है। ब्रज में होली मनाने देश विदेश से लोग आते हैं। अगर आप भी ब्रज की होली के रंग में रंगना चाहते हैं तो ब्रज भूमि की ओर चले आए। हम आपको बता दे कि कृष्ण धाम की होली का पूरा कार्यक्रम इस प्रकार है।

रमणरेती आश्रम में फूलो और गुलाल की होली होती है। इसमें टेसूके फूलों और गुलाल से होली खेली जाती है। वास्तव में यह दृश्य बांकेबिहारी की भक्ति लीन कर देता है। रमणरेती आश्रम में होली का आयोजन 27 फरवरी से शुरू होगा। वही श्री द्वारिकाधीश और बिहारीजी मंदिर में होली 2 मार्च को होगी।

ये है ब्रज की होली के प्रमुख कार्यक्रम

– 27 फरवरी को नंदगांव में फाग आमंत्रण महोत्सव और बरसाना में लड्डू होली।

– बरसाना में 28 फरवरी को होगी लट्ठमार होली।

– नंदगांव में लट्ठमार होली 1 मार्च को होगी।

– श्रीकृष्ण जन्मभूमि और श्री द्वारिकाधीश और बिहारीजी मंदिर में होली 3 मार्च को होगी लट्ठमार होली।

– गोकुल में छड़ी मार होली 4 मार्च को खेली जाएगी।

मथुरा के बरसाना में लड्डू होली बड़े धूमधाम से मनाई जाती है। यह बरसाना की लठ्ठमार होली से एक दिन पहले मनाई जाती है। 1 मार्च को नंदगांव में फाग आमंत्रण महोत्सव और बरसाना में लड्डू होली होगी। इस दिन नंदगांव के लोग बरसाना जाकर लठ्ठमार होली खेलते हैं। वहीं दशमी के दिन यानि अगले दिन बरसाने के ग्वाला नंदगांव लठ्ठमार होली खेलने के लिए आते हैं। इस बार बरसाना में 28 फरवरी को और नंदगांव में 1 मार्च को लट्ठमार होली होगी।

श्रीकृष्ण जन्मस्थान मे होली

रंगभरनी एकादशी के दिन श्रीकृष्ण जन्मस्थान द्वारकाधीश में होली मनाई जाती है। इस दिन ब्रज में देश विदेश से आए भक्तों के साथ पूरा मथुरा होली के कार्यक्रम में हिस्सा लेने के लिए एकत्रित होता है। श्रीकृष्ण जन्मभूमि और श्री द्वारिकाधीश और बिहारीजी मंदिर में होली 3 मार्च को होगी।

गोकुल में छड़ी मार हुरंगा होली

भगवान श्रीकृष्ण जी के गांव गोकुल में खेली जाएगी। इसके बाद दाऊजी का हुरंगा होगा। दाऊ जी का हुरंगा दाऊजी मंदिर में आयोजित किया जाता है। दाऊजी का हुरंगा होली भगवान श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलदेव पर केंद्रित है।

होली की एक अलग ही उमंग और मस्ती होती है, जो अनायास ही लोगों के दिलों में गुदगुदी व रोमांच भर देती है। खेतों में गेहूं-चने की फसल पकने लगती है। जंगलों में महुए की गंध मादकता भर देती है। कहीं आम की मंजरियों की महक वातावरण को बासंती हवा के साथ उल्लास भरती है, तो कहीं पलाश दिल को हर लेता है। ऐसे में फागुन मास की निराली हवा में लोक-संस्कृति परंपरागत परिधानों में आंतरिक प्रेमानुभूति के सुसज्जित होकर चारों ओर मस्ती व भांग का आलम बिखेरती है जिससे लोग जिंदगी के दुख-दर्द भूलकर रंगों में डूब जाते हैं।

हमारे देश के गांव-गांव में ढोलक पर थाप पड़ने लगती है, झांझों की झंकार खनखना उठती है और लोकगीतों के स्वर समूचे वातावरण को मादक बना देते हैं। आज भी ब्रज की तरह गांवों व शहरों के नर-नारी व बालक-वृद्ध सभी एकत्रित होकर खाते-पीते व गाते हैं और मस्ती में नाचते हैं।

राधा-कृष्ण की रासस्थली सहित चौरासी कोस की ब्रजभूमि के अपने तेवर होते हैं जिसकी झलक गीतों में इस तरह फूट पड़ते को आतुर है, जहां युवक-युवतियों में पारंपरिक प्रेमाकंठ के उदय होने की प्राचीन पराकाष्ठा परिष्कृत रूप से कूक उठती है।

जो इस प्रकार है-

आज विरज में होली रे रसिया,
होली रे रसिया बरजोरी रे रसिया,
कहूं बहुत कहूं थोरी रे रसिया,
आज विरज में होली रे रसिया।

नटखट कृष्ण होली में अपनी ही चलाते हैं। गोपियों का रास्ता रोके खड़े होना उनकी फितरत है, तभी जी भरकर फाग खेलने की उन जैसी उच्छृखंलता कहीं देखने को नहीं मिलती। उनकी करामाती हरकतों से गोपियां समर्पित हो जाती हैं और वे अपनी बेवशी घूंघट काढ़ने की शर्म-हया को बरकरार रखे मनमोहन के चितवन को एक नजर देखने की हसरत लिए जतलाती हैं कि सच, मैं अपने भाई की सौगंध खाकर कहती हूं कि मैं तुम्हें देखने से रही। इसलिए उलाहना करते हुए कहती हैं कि-

भावै तुम्हें सो करौ सोहि लालन,
पाव पडौ जनि घूंघट टारौ,
वीर की सौ तुम्हें देखि है कैसे,
अबीर तो आंख बचाय के डारौ।

जब कभी होली खेलते हुए कान्हा कहीं छिप जाते हैं तब गोपियां व्याकुल हो उन्हें ढूंढती हैं। उनके लिए कृष्ण उस अमोल रत्न की तरह हैं, जो लाखों में एक होता है। वे कृष्ण के मन ही नहीं, अपितु अंगों की सहज संवेदनाओं से भी

चिर-परिचित हैं तभी उनके अंग स्पर्श के अनुभव को तारण करते हुए उपमा देती हैं कि उनके अंग माखन की लुगदी से भी ज्यादा कोमल हैं-

अपने प्रभु को हम ढूंढ लियो,
जैसे लाल अमोलक लाखन में,
प्रभु के अंग की नरमी है जिती,
नरमी नहीं ऐसी माखन में।

वे कृष्ण को एक नजरभर के लिए भी अपने से अलग रखने की कल्पना नहीं करतीं। यदि वे नजरों के आगे नहीं होते तो उस बिछोह तक को वे अपने कुल की मर्यादा पानी में मिलाकर पीने का मोह नहीं त्यागतीं। जब कृष्ण दो-चार दिन नहीं मिलते तो उस बिछुडन की दशा में उनको होश भी नहीं रहता कि कब उनकी आंखों से बरसने वाले आंसुओं से शरीर धुल गया है-

मनमोहन सों बिछुरी जबसे,
तन आंसुन सौ नित धोबति है,
हरी जू प्रेम के फंद परी,
कुल की कुल लाजहि खोवती है।

इस कारण सभी गोपियां मान-प्रतिष्ठा खोकर दुख उठाने के लिए सदैव तत्पर रहती हैं। उन्हें भोजन में रुचि नहीं है बशर्ते कृष्ण ब्रजभूमि त्यागने को न कहे। ब्रजभूमि से इतना अधिक गहरा लगाव हो गया है, जैसे आशा का संबंध शरीर से एकाकार हो जाता है-

कहीं मान-प्रतिष्ठा मिले न मिले,
अपमान गले में बंधवाना पड़े,
अभिलाषा नहीं सुख की कुछ भी, दुख नित नवीन उठाना पड़े।
ब्रजभूमि के बाहर किंतु प्रभो,
हमको कभी भूल के न जाना पड़े, जल-भोजन की परवाह नहीं,
करके व्रत जीवन यूं ही बिताना पड़े।

फाग की घनी अंधेरी रात में श्याम का रंग उसमें मेल खाता है। गोपी उन्हें रंगने को दौड़ती हैं किंतु वे पहले ही सतर्क हैं और गोपियां अपने मनोरथ सिद्ध किए बिना कृष्ण के हाथों अपने वस्त्र ओढ़नी तक लुटा आती हैं-

फाग की रैनि अंधेरी गलि,
जामें मेल भयो सखि श्याम छलि को,
पकड़ बांह मेरी ओढ़नी छीनी।
गालन में मलि दयो रंग गुलाल को टीको,
आयो हाथ न कन्हैया गयो न भयो,
सखी हाय मनोरथ मेरे जीको।

कृष्ण पर रीझीं गोपियां अनेक अवसर खो बैठती हैं, तो कई पाती भी हैं। इधर कृष्ण गोपी को अकेला पाकर उस पर अपना अधिकार जताते हैं तो उधर गोपियां कृष्ण को गलियों में रोक गालियां गाते हुए तालियां बजाती पिचकारी से रंग देती हैं-

मैल में माई के गारी दई फिरि,
तारी दई ओ दई ओ दई पिचकारी,
त्यों पद्माकर मेलि मुढि इत,
पाई अकेली करी अधिकारी।

फाग हो और बृजभान दुलारी न हो, ऐसा संभव नहीं। रंग, गुलाल व केसर लिए मधुवन में कृष्ण के मन विनोद हिलोर लेता है कि अब बृजभान ललि के साथ होली खेलने का आनंद रंग लाएगा। लेकिन आज के बदलते फैसन ने हमारी संस्कृति को ही बदलकर रख दिया है। जिसके कारण हम अपनी भारतीय संस्कृति से दूर चले जा रहे है।

–प्रकाश चंद्र शर्मा,
स्वतंत्र पत्रकार एवं लेखक

बाबा श्याम के जयकारों से गूंजी खाटू नगरी

खाटूश्यामजी, (निसं)। श्याम बाबा का वार्षिक लक्खी मेला अब अपने पूर्ण परवान पर है। मेले के सातवें दिन मंगलवार को बाबा श्याम के जयकारों की गूंज से खाटू नगरी गुंजायमान हो गई। श्याम भक्त श्याम बाबा की जय,

- **श्याम भक्त इस वार्षिक लक्खी मेले में 24 घंटे बाबा श्याम का दीदार कर रहे हैं**
- **रींगस से खाटू श्यामजी पदयात्रा मार्ग पर बाबा श्याम के भक्तों के लिए लगे भण्डारों में सेवा सुश्रुषा का अनूठा उदाहरण देखने को मिल रहा है**

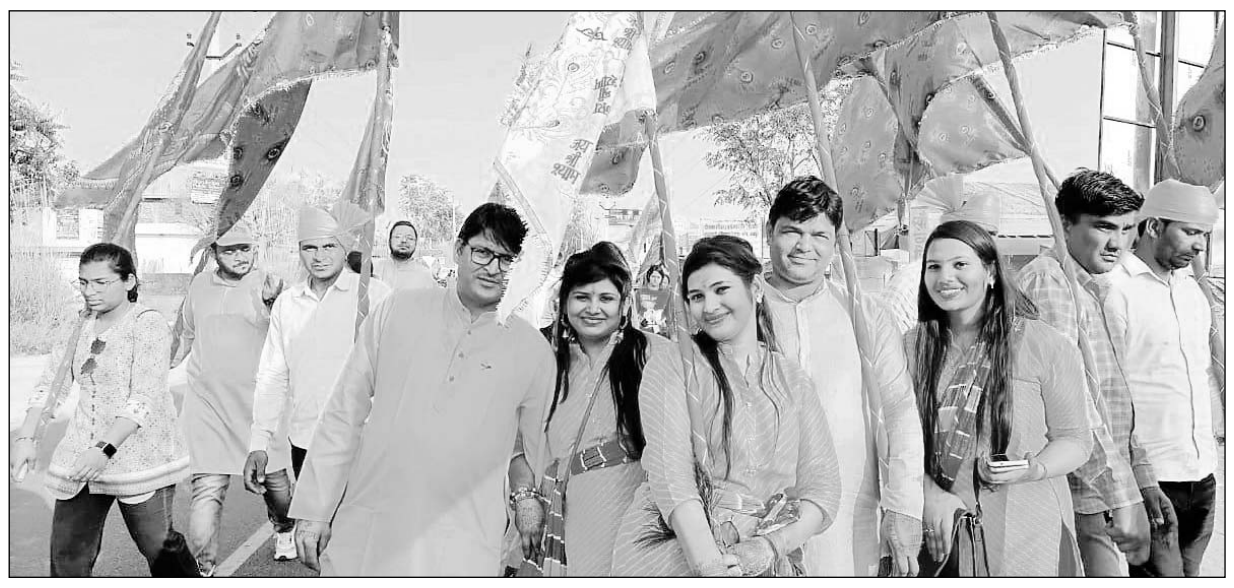

श्याम बाबा का वार्षिक लक्खी मेला अब अपने पूर्ण परवान पर है। श्याम भक्त नाचते-गाते खाटू पहुंच रहे हैं।

खाटू नरेश की जय, हारे के सहारे की जय, तीन बाण धारी की जय, कलयुगी अवतार की जय, मेरा सर्वेश्वर मेरा श्याम के जयकारों के साथ बाबा श्याम के दर्शन करके मन्नत मांग रहे हैं ।

रींगस से खाटूश्यामजी पदयात्रा मार्ग पर बाबा श्याम के भक्तों के लिए पग पग पर लगे भण्डारों में सेवा सुश्रुषा का अनूठा उदाहरण देखने को मिल रहा है। रींगस रोड पर 17 किलोमीटर की दूरी नाचते गाते कब पूरी हो जाती है यह पता ही नहीं चलता। सिर्फ बाबा श्याम के दर्शन की ललक ही ललक दिखाई देती है। श्याम भक्त इस वार्षिक लक्खी मेले में 24 घंटे बाबा श्याम का दीदार कर रहे हैं। वहीं बाबा श्याम का अलौकिक श्रंगार प्रतिदिन किया जा रहा है। श्री श्याम मंदिर कमेटी द्वारा की गई इस बार की दर्शन व्यवस्था के चलते आने वाले श्याम भक्तों को सुगमतापूर्वक दर्शन हो रहे हैं।

वार्षिक लक्खी मेले में हर वर्ष की भांति इण्डियन रेड क्रॉस सोसाइटी के द्वारा बाबा श्याम के मेले में आने वाले श्रद्धालुओं की सेवार्थ नि:शुल्क चिकित्सा कैम्प का विधिवत उद्घाटन उपखंड अधिकारी व मेला मजिस्ट्रेट प्रतिभा वर्मा, सहायक निदेशक राकेश कुमार लाटा व बीसीएमओ डॉ अश्विनी कुमार स्वामी ने फीता काटकर किया।

कैंप की जानकारी देते हुए मेला मजिस्ट्रेट प्रतिभा वर्मा ने कहा कि संपूर्ण मेला क्षेत्र में चिकित्सा विभाग द्वारा कैंप लगाए जा रहे हैं। वहीं इण्डियन रेड क्रॉस सोसाइटी के द्वारा चिकित्सा कैंप का शुभारंभ मंदिर दर्शन निकास मार्ग पर किया गया है जिससे श्रद्धालुओं के पैरों में होने वाले छाले सहित अनेक छोटी-मोटी बीमारियों का उपचार किया जाएगा।

रींगस संवाददाता के अनुसार : प्राचीन श्याम मंदिर के इस बार हैलीकॉप्टर 11 बार चौखट पर हाजरी देकर परिक्रमा करेंगा। इसकी सभी व्यवस्थाए पूरी कर ली गई है। श्याम सेवक मानदास, विक्रम, सिंह, राहुल चौहान ने बताया कि इस बार मेले के दौरान श्श्याम मंदिर में जाने वाले सभी रास्तों को विद्युतिकृत लाइटों से जगमग किया गया है। श्याम दरबार की छटा स्वर्णजडित महल जैसी बनाई गई है। वहीं हैलीकॉप्टर से पुष्प वर्षा होंगी। इस दौरान मंदिर में एकादशमी के दिन ही विशाल भजन संध्या तथा फागोत्सव होगा। इसमें बाबा की तरफ से अनेक प्रकार के इत्र, गुलाल, गुलाब आदि के फूलों की वर्षा होगी।

राशिफल बुधवार 1 मार्च, 2023

पंडित अनिल शर्मा

फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2079, मृगशिरा नक्षत्र प्रात: 9:52 तक, प्रीति योग सांय 5:01 तक, तैतिल करण सांय 5:29 तक, चन्द्रमा आज मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-वृष, बुध-कुम्भ, गुरू-मीन, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 9:52 तक है। रवियोग सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। आज बुध पूर्व में रात्रि 8:25 पर होगा। आज नन्दगाँव होली और परशु दशमी है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:47 तक, शुभ 11:13 से 12:39 तक, चर 3:31 से 4:57 तक, लाभ 4:57 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:55, सूर्यास्त 6:13

मेष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मकर
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

मिथुन
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा।

तुला
अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

कर्क
व्यक्तिगत परेशानियों के कारण मन में असंतोष बना रहेगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

वृश्चिक
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी का सामना हो सकता है।

मीन
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।